राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020): अध्यापकों की भूमिका

डॉ. नम्रता शर्मा
डॉ. सरिता चौधरी
अनामिका यादव

Scanned with OKEN Scanner

This First Edition published in 2024
© 2024 New Delhi Publishers, India

Title: राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020): अध्यापकों की भूमिका

Authors: Dr. Namrata Sharma, Dr. Sarita Chaudhary and Anamika Yadav

Description: First edition | New Delhi Publishers 2024 | Includes bibliographical references and index.

Identifiers: ISBN 9788197362606 (Print) | 9788197362620 (eBook)

Cover Design: New Delhi Publishers

All rights reserved. No part of this publication or the information contained herein may be reproduced, adapted, abridged, translated, stored in a retrieval system, computer system, photographic or other systems or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, by photocopying, recording or otherwise, without written prior permission from the publisher.

Disclaimer: Whereas every effort has been made to avoid errors and omissions, this publication is being sold on the understanding that neither the editors (or authors) nor the publishers nor the printers would be liable in any manner to any person either for an error or for an omission in this publication, or for any action to be taken on the basis of this work. Any inadvertent discrepancy noted may be brought to the attention of the publisher, for rectifying it in future editions, if published.

Trademark Notice: Product or corporate names may be trademarks or registered trademarks, and are used only for identification and explanation without intent to infringe

NEW DELHI PUBLISHERS

Head Office: 90, Sainik Vihar, Mohan Garden, New Delhi, India

Corporate Office: 7/28, Room No. 208/209, Vardaan House, Mahavir Lane, Ansari Road, Daryaganj, New Delhi, India

Branch Office: 216, Flat-GC, Green Park, Narendrapur, Kolkata, India

Tel: 011-23256188, 011-45130562, 9971676330, 9582248909

Email: ndpublishers/rediffmail.com/gmail.com

Website: www.ndpublisher.in

Scanned with OKEN Scanner

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020): अध्यापकों की भूमिका

लेखक

डॉ. नम्रता शर्मा

डॉ. सरिता चौधरी

अनामिका यादव

NEW DELHI PUBLISHERS

New Delhi, Kolkata

Scanned with OKEN Scanner

सहयोगी सूची

डॉ. शिखा रानी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर (हिन्दी विभाग)
श्री द्रोणाचार्य स्नातकोत्तर महाविद्यालय
दनकौर (गौतम बुद्ध नगर), भारत
ई-मेल: drshikha.agar@gmail.com

हर्षवर्धन पाण्डे
शोधार्थी,
कुमाऊं विश्वविद्यालय, नैनीताल, उत्तराखंड, भारत

अमित वसंतराव देवतळे
शोधार्थी,
संत गाडगेबाबा अमरावती विद्यापीठ, भारत
ई-मेल: Amitdeotale2010@gmail.com)

डॉ. सुहासकुमार रूपराव पाटील
प्राचार्य
शासकीय शिक्षण महाविद्यालय, यवतमाळ, भारत

भरत यादव
शोधार्थी, शिक्षा विभाग
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर,
छत्तीसगढ़, भारत
ई-मेल: bharatyadav945@gmail.com

डॉ. ज्योति वर्मा
सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर,
छत्तीसगढ़, भारत
ई-मेल: jyoti-edu1982@gmail.com

डॉ. डी. एस. मुजालदा
सहायक प्रोफेसर (कॉमर्स),
सरदारपुर - राजगढ़, भारत

डॉ० रश्मि जहाँ
एम.एड., पी-एच.डी., असिस्टेन्ट प्रोफेसर
श्री द्रोणाचार्य स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भारत

डॉ. सपना कासलीवाल
सहायक प्रोफेसर (कॉमर्स)
श्री राजेन्द्र सूरी गवर्नमेंट कॉलेज
सरदारपुर - राजगढ़, भारत

डॉ. राजेश एक्का
सहायक आचार्य, शिक्षा शास्त्र विभाग
बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर केंद्रीय विश्वविद्यालय,
लखनऊ (उत्तर प्रदेश)-226025, भारत

अनीस अहमद खान
पी-एच.डी. शिक्षाशास्त्र
शिक्षा शास्त्र विभाग,
बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर केंद्रीय विश्वविद्यालय,
लखनऊ (उत्तर प्रदेश)-226025, भारत

डॉ. राकेश कुमार बडासरा
सहायक आचार्य -शिक्षा
मोहिनी देवी गोयनका गर्ल्स बी.एड. कॉलेज,
लक्ष्मणगढ, सीकर, राजस्थान, भारत

आदर्श कुमार
पी-एच.डी. शिक्षाशास्त्र (शोधार्थी)
शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी
विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र, भारत
ई-मेल: adarshpathak27mve@gmail.com

प्रो. शिरीष पाल सिंह
प्रोफेसर,
सीआईईटी, एनसीईआरटी,
नई दिल्ली, भारत

अभिषेक वर्मा
शोधार्थी, शिक्षा विभाग
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय
वर्धा, महाराष्ट्र, भारत

Scanned with OKEN Scanner

डॉ. रीमा देवांगन
सहायक प्राध्यापक (शिक्षा विभाग),
सेंट थॉमस महाविद्यालय, भिलाई, छत्तीसगढ़, भारत
ई-मेल: stcreemadewangan@gmail.com

डॉ. रश्मि गुप्ता
असिस्टेंट प्रोफेसर , रसायन शास्त्र विभाग
श्री द्रोणाचार्य पीजी कॉलेज दनकौर ,
गौतम बुद्ध नगर, भारत
ई-मेल: rashmigupta_jbp2007@rediffmail.com

एकता मिश्रा
शोधार्थी (शिक्षा विभाग)
डॉ. बी. आर. अंबेडकर विश्वविद्यालय,
दिल्ली, भारत

डॉ. इंदिरा कुमारी
सहायक आचार्य
मोहिनी देवी गोयनका गर्ल्स बी.एड. कॉलेज,
सीकर, राजस्थान, भारत
ई-मेल: irkbudania@gmail.com

डॉ. अरुण कुमार खोबरे
माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार
विश्वविद्यालय, माखनपुरम परिसर,
बिशनखेड़ी, भोपाल, भारत

डॉ. राकेश कुमार
प्राचार्य
मोहिनी देवी गोयनका गर्ल्स बी.एड. कॉलेज
सीकर, राजस्थान, भारत
ई-मेल: rkbudania@gmail.com

Arindam Dasgupta
State Aided College Teacher 1
Department of Zoology,
Vivekananda College for Women,
Kolkata, India
E-mail: arindamdsgpta12@gmail.com

Jyoti Shukla
Research Scholar,
(Department of Education)
CMP College, University of Allahabad,
Allahabad, India
E-mail: jshukla9889@gmail.com

Mrs. Monalisha Tamuly
Assistant Professor, Deptt. of Education
Marangi Mahavidyalaya, Assam, India

Dr. Parasurama D
Assistant Professor,
JSS Sri Manjunatheshwara College of Education,
Dharwad, Karnataka, India
E-mail: parasurama.dlrskt@gmail.com

Prerna Priya
Assistant Professor,
Incharge, Dept. of Women Studies
ANDNNM College, Kanpur, India

Pradeep Kumar Yadav
Research scholar,
Department of Education
ISDC University of Allahabad,
Allahabad, India
E-mail: pky9451@gmail.com

Sohan Singh
Research Scholar,
Department of Education
CPM College, UOA, Prayagraj, India
E-mail: rescholar.sohan10082020@gmail.com

Dr. Sapna Kasliwal
Asst. Prof. Commerce
SRS Govt. College, Sardarpur, India
E-mail: spnjain3@gmail.com

Mrs. Vartika Sañena
Department of Management,
Faculty of Social Science,
Dayalbagh Education Institute- Agra, India
E-mail: vartikasñaena95@gmail.com

Scanned with OKEN Scanner

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षकों की व्यावसायिक कुशलता के विभिन्न आयाम एवं चुनौतियां

भरत यादव
शोधार्थी, शिक्षा विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर,
डॉ. ज्योति वर्मा
सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर,

शोध सारांश

शिक्षा एक सतत चलने वाली प्रक्रिया है एवं शिक्षा का उद्देश्य प्रबुद्ध नागरिकों का निर्माण करना है। आज ज्ञान और विज्ञान के निरन्तर विकास एवं ज्ञान के हस्तांतरण की तकनीकों के विस्तार से शिक्षा के स्वरूप में व्यापक स्तर पर परिवर्तन आया है जिसने राष्ट्रीय, आर्थिक व सामाजिक अपेक्षाओं को अधिक बढ़ा दिया है। हम सभी इस बात से सहमत है कि प्रत्येक बच्चे को शिक्षा प्राप्त करने का मौलिक अधिकार है। इस शैक्षिक प्रक्रिया का लक्ष्य विद्यार्थियों में बुनियादी क्षमताओं और कौशलों का विकास होना चाहिए ताकि वह स्वस्थ जीवन जी सकें और देश के विकास में सहभागी बने। शिक्षक का कार्य केवल अध्यापन करना ही नही है अपितु समाज के शैक्षिक, सांस्कृतिक लक्ष्यों के अनुरूप भावी पीढ़ी को भविष्य की चुनौतियों के लिये तैयार करना एवं मार्गदर्शन प्रदान करना है। ऐसा तभी संभव है जब एक शिक्षक अपने दायित्व का निर्वाह अंतर्मन से करता हो और शिक्षकीय व्यावसायिक कुशलता में पूर्ण हो। वर्तमान समय में शिक्षकों को अपने दायित्व निर्वाह व व्यवसाय में बहुत सारी चुनौतियां का सामना करना पड़ता है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य शिक्षकों की व्यवसायिक कुशलता के महत्वपूर्ण आयाम को परिभाषित करना एवं उसमें आने वाली चुनौतियों का विश्लेषण करना है जो कि शिक्षा प्रणाली में गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए अति आवश्यक हैं।

मुख्य बिन्दु: शिक्षकों की व्यावसायिक कुशलता, शिक्षकों की व्यावसायिक कुशलता को प्रभावित करने वाले कारक, व्यावसायिक कुशलता में आने वाली चुनौतियां।

Scanned with OKEN Scanner

मनुष्य के सर्वांगींण विकास में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षा का उच्चतम स्तर किसी भी व्यक्ति को समाज में एक अलग पहचान दिलाने में सहायक होता है। किसी भी व्यक्ति के सामाजिक व व्यक्तिगत विकास हेतु शिक्षा बहुत ही आवश्यक है, यह उसको अपने जीवन में एक अलग उच्च स्तर और अच्छाई की भावना देती है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति कठिन से कठिन समस्याओं का आसानी से समाधान करने की योग्यता को प्राप्त कर सकता है। शिक्षा न केवल व्यक्तिगत समस्याओं को हल करने की क्षमता देती है, बल्कि सामाजिक, राष्ट्रीय एवं विश्वव्यापी समस्याओं को भी हल करने की क्षमता देती है। अतः हम सब के अच्छे एवं सुखदायी भविष्य के लिए शिक्षा एक आवश्यक साधन के रूप में हैं इसलिए हम लोगों को शिक्षा रूपी साधन का उपयोग करके अपना तथा अपने समाज का बेहतर करने की कोशिश करनी चाहिए। राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास के लिए सभी नागरिकों का शिक्षित होना समय की मांग है। हम सभी इस बात से सहमत है कि प्रत्येक बच्चे को शिक्षा प्राप्त करने का मौलिक अधिकार है। इस शैक्षिक प्रक्रिया का लक्ष्य विद्यार्थियों में बुनियादी क्षमताओं और कौशलों का विकास होना चाहिए ताकि वह स्वस्थ जीवन जी सकें और देश के विकास में सहभागी बने। ऐसा तभी संभव है जब एक शिक्षक अपने दायित्व का निर्वाह अंतर्मन से करता हो और शिक्षकीय व्यावसायिक कुशलता में पूर्ण हो। वर्तमान समय में शिक्षकों को अपने दायित्व निर्वाह व व्यवसाय में बहुत सारी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। शिक्षा प्रक्रिया की पूर्णता को प्राप्त करने के लिए एक प्रमुख चुनौती शिक्षकों की व्यवसायिक कुशलता है। शिक्षा तकनीक, पाठ्यक्रम और विद्यार्थी-शिक्षक संबंधों की गुणवत्ता सब शिक्षकों की व्यवसायिक कुशलता से प्रभावित होते हैं। डिजिटलीकरण और विद्यार्थियों की आवश्यकताओं में बदलाव ने शिक्षकों को नये कौशलों की आवश्यकता है। इस तरह शिक्षकों को व्यवसायिक कुशलता का निर्धारक तत्व पुनरावृत्ति करने का अवसर मिलता है। इस शोध पत्र का उद्देश्य शिक्षकों की व्यवसायिक कुशलता के महत्वपूर्ण आयाम को परिभाषित करना और उनका विश्लेषण करना है जो शिक्षा प्रणाली में सफलता के लिए आवश्यक हैं। इसके माध्यम से हम शिक्षकों की व्यवसायिक कुशलता को समझने की कोशिश करेंगे और प्रशिक्षण कार्यक्रमों की आवश्यकता को बताएंगे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार, शिक्षकों को शिक्षा प्रक्रिया का हृदय माना जाता है। इसमें शिक्षक व्यवसायिक कुशलता को महत्वपूर्ण प्राथमिकता दी गई है और भारत में शिक्षकों के मान-सम्मान में सुधार के लिए कई सुधारों का विवरण दिया गया है।

शिक्षक व्यावसायिक कुशलता

संस्था और व्यवसायिक से संबद्ध एक शिक्षक द्वारा नैतिक ज्ञान, कौशल व्यवहार के उच्च मानकों का अपने व्यवसाय में अभ्यास करना है यानी अपने व्यवसाय में शिक्षण (अप टू डेट) परख का विचार, नैतिक निर्णय लेने की क्षमता, छात्रों की सफलता में ध्यान केंद्रित करने की क्षमता और एक आकर्षक और समावेशी शिक्षा वातावरण बनाने की क्षमता भी शामिल है। साथ ही विषय-विषयक विशेषज्ञता का प्रदर्शन करना, प्रभुत्व को बनाए रखना, नशे की लत, प्रशिक्षण

Scanned with OKEN Scanner

तकनीकों का उपयोग करना और अज्ञात अभ्यास में शिक्षक व्यावसायिक उद्यमों को शामिल करना शामिल होता है। व्यावसायिक कुशलता प्राप्त करने के लिए एक शिक्षक में सभी के साथ-साथ नेतृत्व, सम्मान, स्तर और सतत व्यवसाय विकास के प्रति-भावना, समग्रता आधारित दृष्टिकोण, क्षमता, और व्यवहार भी शामिल होते हैं, जो व्यावसायिक शिक्षण के अभ्यास और व्यावसायिकता परम्पराओं का समर्थन करते हैं।

व्यवसाय एवं व्यावसायिक कुशलता में अंतर

व्यवसायिक कुशलता और व्यवसाय के अवधारणाएँ अलग-अलग होती हैं। व्यवसाय एक विशेष अध्ययन क्षेत्र या करियर होता है जिसके लिए विशेष अभ्यास की आवश्यकता होती है। दूसरी तरफ व्यवसायिक कुशलता को व्यापारिता कहा जाता है- यह क्षमता को प्रदर्शित करती है जो क्षमतापूर्णता, ईमानदारी एवं नैतिक आचरण को प्रकट करती है। व्यवसायिक कुशलता और व्यवसाय दो अलग अवधारणाएँ हैं। हालांकि, ये दो अलग विचार हैं, लेकिन इन्हें अक्सर प्रयोग में एक दूसरे के समानार्थी रूप में किया जाता है। उदाहरण के रूप में, हम कह सकते हैं कि एक डॉक्टर या शिक्षक को अपने कार्य के क्षेत्र में व्यवसायिक कुशलता प्रदर्शित करनी चाहिए। इसलिए उन्हें ज्ञान रखना, नैतिक होना और अपने व्यवसाय द्वारा उनसे क्या अपेक्षित है उसके अनुसार कार्य करना चाहिए।

व्यवसाय वह पेशा होता है जो विभिन्न ज्ञान और कौशलों के सामर्थ्य की महारत की मांग करता है। इसमें कौशलों और ज्ञान का उपयोग दूसरों के हित के लिए किया जाता है। सामान्य रूप से व्यवसाय नैतिकता संहिता का नियमन करती है, जो योग्यता, ईमानदारी, नैतिकता, परोपकार एवं अपने विषय-क्षेत्र में सामान्य हित को बढ़ावा देने के लिए समर्पित होते हैं। दूसरी तरफ व्यवसायिक कुशलता, डॉक्टर एवं शिक्षक जैसे विशेषज्ञों पर जनता के विश्वास को समर्थन करने के लिए एक व्यवसाय सिद्धांत, आचरण एवं आपसी परस्पर क्रियाएं होती है जो एक शिक्षक या डॉक्टर के लिए अति आवश्यक हैं। इसमें उन कार्यों व गुणों को शामिल किया जाता है जिन्हें विशेषज्ञ अपने हितग्राहकों, सहकर्मियों और समाज के साथ अपनी अंतः क्रिया व व्यवहार द्वारा प्रदर्शित करते हैं। इसलिए व्यवसाय में जनता (हितग्राहकों) के विश्वास एवं स्वयं के आत्मविश्वास को बनाए रखने के लिए व्यवसायिक कुशलता आवश्यक होती है। अतः उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि व्यवसायिक कुशलता उन विशेषज्ञों (शिक्षक या डॉक्टर) के विश्वास और आचरणों को प्रदर्शित करती है जो उन्हें प्रशिक्षण के द्वारा प्राप्त हुआ है। जबकि एक व्यवसाय या पेशा स्वयं के ज्ञान और कौशल निपुणता की संभावना से सम्बंधित है।

शिक्षकों के लिए व्यावसायिक कुशलता क्यों आवश्यक है?

इक्कीसवीं सदी की शिक्षा संबंधी चुनौतियों को पता करने के लिए, आज के शिक्षकों को ज्ञानवान होना और विभिन्न प्रतिभाएं रखनी चाहिए। कक्षा में शिक्षक की व्यवसायिक कुशलता की अवधारणा की गहराई से समझने से शिक्षकों को उनके कर्तव्यों को निभाने में आत्मविश्वास

Scanned with OKEN Scanner

मिल सकता है और छात्रों की शिक्षा में अपना योगदान देने में सक्षम हो सकते हैं। शिक्षा व्यवस्थाओं को सुधारने के लिए शिक्षा व्यवसायियों को सीखने, सोचने, पढ़ाने, मूल्यांकन करने और संचार से संबंधित विभिन्न कौशलों में कुशल होना चाहिए। पेशेवर शिक्षक हमेशा पेशेवर कार्य उत्पन्न करने की कोशिश करेंगे क्योंकि इसे उनकी आत्मा में होता है।

शिक्षकों की व्यवसायिक कुशलता क्षमता उन्हें नवीनतम शिक्षण तकनीकों और कई संसाधनों के बारे में जानकारी देती है, जो उनके विद्यार्थियों के लिए फायदेमंद होता हैं। और साथ ही, यह उन्हें अपने विद्यार्थियों के लिए अनुकूल शिक्षण योजनाओं का चुनाव करने में भी सहायता करता है। जिससे शिक्षकों को अपने विद्यार्थियों के साथ संवाद करने और उनकी आवश्यकताओं को समझने में मदद मिलती है अगर वे व्यावसायिक हैं। यह उन्हें विभिन्न शैक्षणिक आवश्यकताओं को समझने में मदद करता है और उन्हें पूरा करने के लिए सबसे अच्छा तरीका खोजने में मदद करती है। और शिक्षकों की व्यवसायिक कुशलता क्षमता उन्हें विद्यार्थियों के विभिन्न शैक्षणिक स्तरों के लिए उपयुक्त शिक्षण योजनाओं का चयन करने में मदद करती है।

विनोद क. जैरथ (2013) के अनुसार व्यवसायिक कुशलता शिक्षकों के शिक्षण कौशल और छात्रों की शैक्षणिक उन्नति के लिए बहुत महत्वपूर्ण होती है। और अच्छे शिक्षक के पास अच्छी शैक्षणिक क्षमता, शिक्षण के तरीकों का ज्ञान और उपयुक्त सामग्री का चयन और उपयोग करने की क्षमता होती है। इसके अलावा, शिक्षकों को अपने विद्यार्थियों से बातचीत करने, उन्हें सलाह देने और उनकी समस्याओं का समाधान करने की क्षमता भी होनी चाहिए। इसलिए, शिक्षकों की व्यवसायिक शिक्षण कौशल को सुधार होती है। कुशलता उन्हें छात्रों के साथ बेहतर संवाद करने में मदद करती है।

हायल (1980) के अनुसार व्यवसायिक कुशलता व्यवहार की मानक होती है। दूसरे शब्दों में एक शिक्षक की व्यवसायिक कुशलता उन आचरणों से निर्धारित की जा सकती है जो वे प्रदर्शित करते हैं।

मोहम्मद सलेह (2000) के अनुसार, कुछ कारक शिक्षकों की व्यवसायिक कुशलता पर प्रभाव डाला हैं। और शिक्षकों के बोझ में छात्रों और कक्षाओं के प्रबंधन के कुछ हिस्से शामिल होते हैं, जैसे कि धन इकट्ठा करना, छात्र डेटा का प्रोसेसिंग करना, इत्यादि। छात्रों के प्रदर्शन की रिपोर्ट और पाठ्यपुस्तकों के लिए ऋण कार्यक्रम की जानकारी भी शिक्षकों की ध्यान, समय, और ऊर्जा को अन्य कार्यों में भटका देती हैं, जो उनकी शिक्षा क्षमता और करियर को आगे बढ़ाने पर प्रभाव डाल सकती हैं।

शिक्षा प्राप्ति के लिए, अनुभव, शिक्षा-प्रशिक्षण, संगठनात्मक समर्थन, सामूहिक सहभागिता, और स्वयं संदर्भ शिक्षकों की व्यावसायिक कुशलता को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण कारक होते हैं। और इन कारकों के माध्यम से शिक्षक अपनी शिक्षा प्रक्रिया में सुधार कर सकते हैं, अद्यतित रह सकते हैं, और अपनी कुशलता को समृद्ध कर सकते हैं। जिससे संगठनात्मक समर्थन, सामूहिक

Scanned with OKEN Scanner

सहभागिता, और स्वयं संदर्भ के माध्यम से शिक्षक अपने क्षेत्र में स्वयं के विकास के लिए भी संवेदनशील होते हैं। इन सभी कारकों को मध्यस्थ करके शिक्षक व्यावसायिक कुशलता को संवर्धित कर सकते हैं और अपने शिक्षा करियर की प्रगति कर सकते हैं।

लुडमेंरर (1999) के अनुसार छात्रों को केवल विभाजन और कई विशेषताओं की पहचान के माध्यम से एक सैद्धांतिक समझ ही प्राप्त होती है जब विषय को सिखाया जाता है। केवल अनुभवात्मक शिक्षा और रोल मॉडलिंग पर भरोसा करना चयनात्मक, अक्सर असंगठित होता है, और वास्तव में पूर्व प्रथाओं को अनुकरण करता है। छात्रों को पेशेवरता की प्रकृति को समझने और इसके आदर्शों को आंतरिकतः समाहित करने के लिए, दोनों दृष्टिकोणों का उपयोग किया जाना आवश्यक होता है।

क्रुएस एट अल. (2009) क्रुएस एवं क्रुएस (2006) के अनुसार शिक्षा व्यवसायिक कुशलता रूप से कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

केंग, हूंग, और आन (1994) के अनुसार विभिन्न क्षेत्रों में अपनी व्यवसायिक कुशलता की परिभाषा स्थापित करने के लिए कई पेशेवर व्यापारों का प्रयास रहा है, विशेष रूप से डॉक्टरेट के क्षेत्र में किया गया है।

इवांस (2008), तांग और चोई (2009), प्रैट और रुरी (1991) के अनुसार व्यवसायिक कुशलता को "एक आदर्श के रूप में परिभाषित किया, जिसके लिए व्यक्ति और व्यावसायिक समूह अन्य श्रमिकों से खुद को अलग करने की आकांक्षा रखते हैं। और विशेषज्ञ पेशेवरों को जो प्रतिष्ठित दर्जा प्राप्त होता है, वह पेशे की निम्नलिखित विशेषताओं पर आधारित होते है:

जस्मिने कमला सुनीर जी (2015) "शिक्षक व्यवसायिक कुशलता" शब्द का उपयोग एक व्यवसाय पेशा का वर्णन करने के लिए किया है, जिसमें सामाजिक, विचारधारा और शैक्षणिक घटक शामिल हैं, जो शिक्षा पेशा में सर्वोच्च मानकों को बनाए रखने का प्रयास करता है और व्यवसाय गठन पर आधारित है। जिसमें ज्ञान, योग्यता और नैतिकता शामिल है। शिक्षा के क्षेत्र में प्रमुख भाषाओं के अनुसार, शिक्षकों के काम की गुणवत्ता और मानकों को बढ़ाने के साथ-साथ उनकी सार्वजनिक धारणा को बेहतर बनाने से उनकी व्यवसाय में सुधार होगा।

हिल्फर्टी (2007) के अनुसार शिक्षकों की व्यवसायिक कुशलता की विभिन्न परिभाषाएं समय के साथ विकसित हैं और संघर्ष के संदर्भ में विपक्षी हितधर्मी समूहों और उनकी हितों के बीच, इसे ऐतिहासिक, राजनीतिक और सामाजिक मंचों के संदर्भ में स्थानांतरित करना महत्वपूर्ण है।

एसाह सुलैमान (2003) के अनुसार व्यवसायिक कुशलता को एक विशिष्ट करियर में गुण, ज्ञान, क्षमताएं, दृष्टिकोण और मान्यताओं का संग्रह के रूप में परिभाषित किया है।

उपरोक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट होता है की व्यवसायिक कुशलता की कोई एक परिभाषा नहीं है बल्कि यह बहुआयामी अवधारणा है जिसे परिभाषित करना बहुत कठिन है।

Scanned with OKEN Scanner

शिक्षक के व्यावसायिक कुशलता को प्रभावित करने वाले निम्नलिखित कारक हो सकते हैं

1. **शिक्षा प्राप्ति:** शिक्षक की अच्छी शिक्षा प्राप्ति, उनके कार्यक्षेत्र में विशेषज्ञता और अध्यापन की योग्यता उनकी व्यावसायिक कुशलता को प्रभावित करती हैं। उन्हें नवीनतम शिक्षा और शिक्षण प्रक्रियाओं के बारे में अपडेट रहने के लिए अद्यतित रहना आवश्यक होता है।

2. **अनुभव:** अनुभवी शिक्षकों की व्यावसायिक कुशलता पर बहुत प्रभाव पड़ता है। अनुभवी शिक्षकों को विभिन्न प्रकार के छात्रों के साथ काम करने का अनुभव होता है और उन्हें समस्याओं को समझने और हल करने के लिए आवश्यक नवाचार, कौशल एवं तकनीकें प्राप्त होते हैं।

3. **शिक्षा-प्रशिक्षण:** शिक्षा-प्रशिक्षण कार्यक्रमों और कार्यशालाओं में प्रवेश/प्रतिभाग करना शिक्षकों की व्यावसायिक कुशलता को बढ़ाता है। ये कार्यक्रम शिक्षकों को नवीनतम शिक्षण तकनीकों, शिक्षण विधियों, मूल्यांकन प्रक्रियाओं आदि के बारे में ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्रदान करते हैं।

4. **संगठनात्मक समर्थन:** एक संगठन जो शिक्षकों को संगठित और पेशेवरता से काम करने में सहायता करता है, उनकी कुशलता को प्रभावित कर सकती है। संगठनात्मक समर्थन में अच्छी शिक्षण सामग्री, प्रशिक्षण के लिए संसाधन, मापदंड और गुणवत्ता नियंत्रण के सामान्यीकरण, और सहायता करने वाले संगठनात्मक संरचनाओं का होना बहुत आवश्यक होता है।

5. **सामूहिक सहभागिता:** शिक्षकों की सामूहिक सहभागिता, उनकी व्यावसायिक कुशलता को बढ़ा सकती है। सहभागिता में शिक्षक अन्य शिक्षकों, प्रशासनिक कर्मचारियों, छात्रों, अभिभावकों और सामुदायिक संगठनों के साथ मिलकर कार्य करते हैं, जिससे उन्हें नए विचार, अनुभव और विभिन्न संकल्पों का ज्ञान एवं अनुभव प्राप्त होता है।

6. **स्वयंसंदर्भ:** शिक्षकों का स्वयंसंदर्भ और स्वाधीनता भी उनकी व्यावसायिक कुशलता को प्रभावित करता है। स्वयंसंदर्भ शिक्षकों को अपने कार्य की गुणवत्ता पर विचार करने, स्वयं के लिए स्थायित्व बनाने और नये उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए संवेदनशील होने में मदद करता है।

व्यावसायिक कुशलता के तत्व

इल्गन, 2015; जुमर्दीन एवं अन्य, 2014; शौकत, 2014 ने अपने शोध पत्र में शिक्षक व्यावसायिक कुशलता के विभिन्न तत्वों को बताया है। शोध पत्रों के अध्ययन के पश्चात् शोधार्थी ने कुछ महत्त्वपूर्ण तत्वों को इस शोध पत्र में वर्णित किया है जो निम्नलिखित है-

1. विषय सामग्री ज्ञान

शिक्षक व्यावसायिकता के मूलभूत घटकों में से एक सामग्री ज्ञान है। शिक्षकों को अपने द्वारा पढ़ाए जाने वाले विषयों की गहरी समझ होनी चाहिए। यह ज्ञान उन्हें पाठ्यक्रम को प्रभावी ढंग

Scanned with OKEN Scanner

से स्थानांतरित करने और छात्रों को उपयुक्त और प्रासंगिक जानकारी प्रदान करने की अनुमति देता है। विषय सामग्री का ज्ञान होने पर शिक्षक छात्रों को विषय वस्तु की गहरी समझ की ओर मार्गदर्शन दे सकते हैं। विषय सामग्री ज्ञान तथ्यों और अवधारणाओं को जानने से परे तक फैला हुआ है। इसमें विभिन्न विषयों के बीच संबंधों को समझना और वास्तविक दुनिया के संदर्भों में ज्ञान को लागू करने में सक्षम होना भी शामिल है। अच्छी विषय सामग्री ज्ञान वाले शिक्षक सार्थक चर्चाओं को सुविधाजनक बना सकते हैं, प्रश्नों के उत्तर दे सकते हैं और गलतफहमियों को प्रभावी ढंग से संबोधित कर सकते हैं।

2. शैक्षणिक ज्ञान

शैक्षणिक ज्ञान का तात्पर्य निर्देशात्मक रणनीतियों और शिक्षण विधियों की समझ से है। इसमें यह जानना आवश्यक है कि आकर्षक पाठ योजनाएं कैसे बनाया जाए, सक्रिय शिक्षण की सुविधा कैसे दी जाए एवं प्रभावी मूल्यांकन रणनीतियों को कैसे लागू किया जाए। उच्च शैक्षणिक ज्ञान वाले शिक्षक अपने छात्रों की विविध शिक्षण आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपनी शिक्षण विधियों को अपना सकते हैं। प्रभावी शिक्षाशास्त्र में विभिन्न प्रकार की शिक्षण तकनीकों का उपयोग शामिल है, जैसे सहकारी शिक्षण, विभेदित निर्देश और प्रौद्योगिकी एकीकरण आदि। इन रणनीतियों को नियोजित करके शिक्षक एक समावेशी और आकर्षक शिक्षण वातावरण बना सकते हैं जो छात्रों की उपलब्धि और विकास को बढ़ावा देने में सहयोग करता है।

3. कक्षा प्रबंधन

प्रभावी कक्षा प्रबंधन शिक्षक व्यावसायिकता का एक अन्य आवश्यक घटक है। इसमें एक सकारात्मक एवं सहायक शिक्षण वातावरण निर्माण करना/देना है जहां छात्र स्वयं को सम्मानित, सुरक्षित एवं अभिप्रेरित महसूस करें। कक्षा प्रबंधन कौशल वाले शिक्षक स्पष्ट अपेक्षाएं स्थापित कर सकते हैं, छात्र व्यवहार को प्रभावी ढंग से प्रबंधित कर सकते हैं और कक्षा में समुदाय की भावना को बढ़ावा दे सकते हैं। सफल कक्षा प्रबंधन रणनीतियों में दिनचर्या स्थापित करना, निष्पक्ष और सुसंगत अनुशासन नीतियों को लागू करना और छात्रों के साथ सकारात्मक संबंध बनाना शामिल है। एक अच्छी तरह से प्रबंधित कक्षा बनाकर, शिक्षक शिक्षण समय का अनुकूलन कर सकते हैं और सीखने के लिए अनुकूल वातावरण बना सकते हैं।

4. चिंतनशील अभ्यास

चिंतनशील अभ्यास शिक्षक व्यावसायिकता का एक महत्वपूर्ण घटक है। इसमें किसी भी शिक्षण प्रथा का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने, उस पर अपनी प्रतिक्रिया देने और आत्म-प्रतिबिंब के आधार पर समायोजन करने की क्षमता सम्मिलित होती है। जो शिक्षक चिंतनशील अभ्यास में संलग्न हैं वे लगातार अपनी निर्देशात्मक रणनीतियों को बेहतर बनाने और छात्रों के सीखने के परिणामों को बढ़ाने के तरीकों की तलाश खोज करते रहते है। चिंतनशील अभ्यास में छात्र प्रदर्शन का विश्लेषण करना, सहकर्मियों एवं पदाधिकारियों से प्रतिक्रिया मांगना तथा कक्षा शिक्षण के अनुभवों पर विचार करना सम्मिलित है। इस प्रक्रिया में सम्मिलित होकर, शिक्षक

Scanned with OKEN Scanner

व्यावसयिक विकास के क्षेत्रों की पहचान कर सकते हैं और अपनी शिक्षण प्रथाओं को बढ़ाने के लिए लक्षित व्यावसायिक विकास गतिविधियों को उपयोग में ला सकते हैं।

5. सहयोग एवं सवांद

सहयोग और संवाद कौशल शिक्षक व्यावसायिकता का एक आवश्यक घटक हैं। शिक्षकों को एक सहायक शैक्षिक समुदाय बनाने के लिए सहकर्मियों, अभिभावकों और अन्य हितधारकों के साथ मिलकर काम करने की आवश्यकता है। प्रभावी सहयोग और संवाद साझा लक्ष्यों, टीम कार्य एवं विचारों और संसाधनों के आदान-प्रदान को बढ़ावा देते हैं। सहयोग में पाठ्यक्रम विकसित करने, पाठ की योजना बनाने और सर्वोत्तम कार्यशैली को साझा करने के लिए सहकर्मियों के साथ कार्य करना सम्मिलित है। छात्रों, अभिभावकों और व्यापक समुदाय के साथ सकारात्मक संबंध बनाने में संवाद कौशल महत्वपूर्ण हैं। प्रभावी सहयोग और संचार को बढ़ावा देकर, शिक्षक का एक नेटवर्क बना सकते हैं जो उनके पेशेवर विकास और प्रभावशीलता को बढ़ाने में सहयोग प्रदान करेगा।

6. नैतिक उत्तरदायित्व

नैतिक जिम्मेदारियाँ शिक्षक व्यावसायिकता का एक महत्वपूर्ण घटक हैं। शिक्षकों को आचार संहिता का पालन करना चाहिए जो छात्रो, सहकर्मियों और समुदाय के साथ उनके व्यावसायिक आचरण का प्रतीक होता है। नैतिक जिम्मेदारियों में गोपनीयता बनाए रखना, सभी छात्रों के साथ निष्पक्षता और सम्मान के साथ व्यवहार करना और पेशेवर मानकों को बनाए रखना शामिल है। शिक्षकों को भी नैतिक दुविधाओं से निपटना चाहिए और ऐसे निर्णय लेने चाहिए जो उनके छात्रों की भलाई और सर्वोत्तम हितों को प्राथमिकता दें। इसके लिए शिक्षक नैतिक व्यवहार का प्रदर्शन करके, शिक्षक विश्वास और विश्वसनीयता का निर्माण करते हैं।

शिक्षकों की व्यवसायिक कुशलता की चुनौतियां

1. **अपर्याप्त वेतन:** शिक्षकों को उनके काम के लिए पर्याप्त मानदेय नहीं मिलता है, जो उनकी व्यवसायिक कुशलता और उनके काम के प्रभाव को प्रभावित कर सकता है।
2. **अधिक भीड़ भरी कक्षाएं:** बड़ी कक्षाओं में शिक्षकों की छात्रों को व्यक्तिगत ध्यान देना मुश्किल हो जाता है, जो उनकी व्यवसायिक कुशलता को प्रभावित करता है।
3. **सामग्री की कमी:** शिक्षकों के पास अपने छात्रों को सफलतापूर्वक पढ़ाने के लिए आवश्यक सामग्री और संसाधन नहीं हो पाते, जो उनकी व्यवसायिक कुशलता को प्रभावित करता है।
4. **असुरक्षित काम करने की स्थिति:** शिक्षकों को अपने काम करने के लिए सुरक्षा से संबंधित चिंताएं हो जाती हैं, जिससे उनकी व्यवसायिक कुशलता को प्रभावित हो जाती है।

Scanned with OKEN Scanner

5. **समर्थन की कमी:** शिक्षकों को उनके व्यवसायिक कुशलता की कमी का सामना करना पड़ता है, जो शिक्षा प्रणाली में व्यवसायिक कुशलता की कमी की अभिव्यक्ति होती है।
6. **विभिन्न शैक्षणिक शैलियों की समझ:** शिक्षकों को अपने छात्रों के विभिन्न शैक्षणिक शैलियों को समझने और उन्हें अनुकूलित करने में कठिनाई उत्पन्न हो जाती है।
7. **प्रभावी संचार की कमी:** शिक्षकों को अपने छात्रों, सहयोगियों और माता-पिता के साथ प्रभावी संचार करने में कठिनाई भी उत्पन हो सकती है।
8. **शिक्षण प्रौद्योगिकी के साथ अद्यतन रहना:** शिक्षकों को नवीनतम शिक्षण प्रौद्योगिकियों के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने में कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है।
9. **स्कूल प्रशासन से दबाव:** शिक्षकों को स्कूल प्रशासन से कुछ निश्चित प्रदर्शन लक्ष्यों को पूरा करने या कुछ विशेष शिक्षण विधियों का पालन करने के लिए दबाव का सामना करना पड़ता है।
10. **समाज के शिक्षकों के प्रति धारणा:** समाज के शिक्षकों के प्रति धारणा उनकी पेशेवरता और कक्ष में प्रभाव को प्रभावित करती है।

इन चुनौतियों से निपटने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए जा सकते हैं:

- शिक्षक प्रशिक्षण में निवेश करें और उन्हें पर्याप्त संसाधन और सहायता प्रदान करें।
- प्रौद्योगिकी-सहायता प्राप्त शिक्षण मॉडल के लिए एक मजबूत बुनियादी ढाँचा विकसित करें।
- पेशे को अधिक आकर्षक बनाने और कुशल शिक्षकों को बनाए रखने के लिए शिक्षकों के पारिश्रमिक का पुनर्मूल्यांकन करें।
- छात्र-केंद्रित शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करते हुए स्कूल पाठ्यक्रम को फिर से डिजाइन करें और उचित शिक्षण संसाधन विकसित करें।
- सरकारी समर्थन की वकालत करना और नीति-निर्माताओं और हितधारकों के बीच एनईपी के लाभों के बारे में जागरूकता पैदा करना।

निष्कर्ष

संबंधित शोध अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि शिक्षकों की व्यवसायिक कुशलता एक बहुआयामी अवधारणा है जिसे परिभाषित करना बहुत कठिन है। शोध अध्ययनों में पाया गया है कि शैक्षिक नीतियों में शिक्षा के व्यापक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया गया, लेकिन शिक्षकों के लिए आवश्यक विशिष्ट व्यावसायिक कौशल पर गहराई से ध्यान नहीं दिया गया है। इसी प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में शिक्षकों के सामने आने वाली विशिष्ठ चुनौतियों का पर्याप्त रूप से पता नहीं लगाया जा सका है पूर्व अनुसंधान में यह भी स्पष्ट नहीं

Scanned with OKEN Scanner

हो रहा है कि शिक्षकों के जनतांत्रिक कारक जैसे क्षेत्रीय अंतर या स्कूल के प्रकार, शिक्षकों के बीच पेशेवर कौशल के विकास को कैसे प्रभावित करते हैं। हमें यह जानना भी आवश्यक है कि व्यावसायिक कौशल में वृद्धि हेतु मौजूदा शिक्षक प्रशिक्षण और विकास कार्यक्रम कितने प्रभावी है।

सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची

1. बाबू, एम. आर. (2023). एनईपी 2020: शिक्षक शिक्षा में आगे के मुद्दे और चुनौतियाँ द इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी। भारतीय मनोविज्ञान का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल. https://doi.org/10.25215/1103-424
2. सेठी, एस.पी. (2023). नई शिक्षा नीति 2020: आधुनिक भारत में शिक्षा की चुनौतियों का समाधान। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च एंड इनोवेशन इन सोशल साइंस, टप्प(प्ट), 903-906| https://doi.org/10.47772/ijriss-2023-7475
3. सोनी, आर. (2022). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में चुनौतियाँ और मुद्दे। इंजीनियरिंग प्रौद्योगिकी और विज्ञान में आधुनिकीकरण के अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान जर्नल (2022): 2026-2031।
4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, सरकार। भारत की। https://www-education-gov-in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0-pdf
5. चट्टोपाध्याय, एस. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020। आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, 55(46), 231
6. बिस्वास, एस. (2023). अवसर एवं चुनौतियाँ NEP - 2020 सुप्रियो। अनुसंधान गेट। https://www.researchgate.net/publication/370683834_OPPORTUNITIES_AND_CHALLENGES_NEP-2020 सुप्रियो
7. ऐथल, पी.एस., और ऐथल, एस. (2019). भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्रस्ताव 2019 में उच्च शिक्षा का विश्लेषण और इसके कार्यान्वयन की चुनौतियाँ। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड इंजीनियरिंग एंड मैनेजमेंट लेटर्स (आईजेएईएमएल), 3(2), 1-35।
8. मुरलीधरन, सिंह.(2021). प्रारंभिक उद्घाटन की जांच जांच:भारत की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति: साक्ष्य और चुनौतियाँ। उदय कार्यक्रम. https://riseprogramme.org/publications/indias - new - national - education - policy - evidence - and - challenges
9. डॉ सारिका कुमारी. एनईपी 2020 शिक्षकों की शिक्षा के लिए चुनौतियां। Int. J. Appl. Res. 2020_6(10): 420-424.
10. कोचरन-स्मिथ, एम., और रीगन, ई.एम. (2021). शिक्षक तैयारी कार्यक्रमों के मूल्यांकन के लिए "सर्वोत्तम अभ्यास"। शिक्षक तैयारी कार्यक्रमों का मूल्यांकन और सुधार। राष्ट्रीय शिक्षा अकादमी।
11. रामकृष्ण, वी. मृत्युलेख: प्रोफेसर अर्जुन देव (1938–2020): इतिहासकार, दूरदर्शी और एक महान इंसान।
12. मार्शल, टी.एच. (1939). सामाजिक संरचना और सामाजिक नीति के संबंध में व्यावसायिकता का हालिया इतिहास। कैनेडियन जर्नल ऑफ इकोनॉमिक्स एंड पॉलिटिकल साइंसधरिव्यू कैनाडिएन डे इकोनॉमिक्स एट साइंस पॉलिटिक, 5(3), 325-340।
13. हॉयल, ई. (1980). शिक्षा में व्यावसायीकरण और गैर-व्यावसायिकीकरण। ई. हॉयल और जे. ई. मेंगरी (सं.) में, शिक्षकों का व्यावसायिक विकास (पीपी. 42-57)। लंदन: कोगन पेज
14. आरा, एन. (2013). 21वीं सदी के छात्रों के लिए शिक्षक प्रशिक्षण और प्रौद्योगिकी उन्नत शिक्षा। उच्च शिक्षा और स्व-शिक्षा की समीक्षा, 6(18), 132-140।

Scanned with OKEN Scanner

15. डे, सी. (1993) 'प्रतिबिंब: पेशेवर विकास के लिए एक आवश्यक लेकिन पर्याप्त शर्त नहीं', ब्रिटिश एजुकेशनल रिसर्च जर्नल, वॉल्यूम। 19, नहीं. 1, पृ. 83-93.

16. केंग, सी.एस., हुंग, डी.सी., और औन, टी.के. (1994). माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक विशेषताएँ और शिक्षक व्यावसायिकता। सिंगापुर जर्नल ऑफ एजुकेशन, 14(1), 55-66। http://doi.org/10.1080/02188799408547725

17. साहू, एन. (2021). पाँच चुनौतियाँ जो एनईपी 2020 के नतीजे को आकार देंगी। ओआरएफ। https://www.orfonline.org/eñpert - speak/five - challenges - that - would - shape - the - outcome - of - nep - 2020/

18. पटेल-जुनानकर, डी. (2017). शिक्षार्थी-केंद्रित शिक्षाशास्त्र: 21वीं सदी में शिक्षण और सीखना। जी. कायिंगो और वी. एम. हास (सं.) में, द हेल्थ प्रोफेशन्स एजुकेटर: ए प्रैक्टिकल गाइड फॉर न्यू एंड स्थापित फैकल्टी (पीपी. 3-11). स्प्रिंगर प्रकाशन कंपनी। https://doi.org/10.1891/9780826177186

19. 9. क्रुक, डी. (2008). व्यावसायिकता पर कुछ ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य। इन: बी. कनिंघम, एड. व्यावसायिकता की खोज: 10-27. लंदन: शिक्षा संस्थान।

20. कोहेन, एल., मेंनियन, एल. और मॉरिसन, के. (2000) रिसर्च मेंथड्स इन एजुकेशन। लंदन: रूटलेजफाल्मर.

21. बॉयट, टी., लुश, आर. एफ. और नेलर, जी. (2001). पेशेवर सेवाओं में नौकरी की संतुष्टि का निधरिण करने में व्यावसायिकता की भूमिका: विपणन शोधकर्ताओं का एक अध्ययन, जर्नल ऑफ सर्विस रिसर्च, 3(4), 321-330

22. चुब्बक, एस. एम. (2002). एक नौसिखिया शिक्षक के रूप में इसे सुरक्षित रखें: नए शिक्षकों के लिए कार्यक्रमों के निहितार्थ। शैक्षिक प्रशासन सार, 37(3), 279-412A http://doi.org/10.1177/0022487101052005003

23. डार्लिंग-हैमंड, एल., और साइक्स, जी. (2003). वांछित: शिक्षा के लिए एक राष्ट्रीय शिक्षक आपूर्ति नीति: "उच्च योग्य शिक्षक" चुनौती को पूरा करने का सही तरीका। शिक्षा नीति विश्लेषण पुरालेख, 11, 1-55।

24. बोरको, एच. (2004) 'व्यावसायिक विकास और शिक्षक शिक्षण: इलाके का मानचित्रण', शैक्षिक शोधकर्ता, खंड। 33, नहीं. 8. यहां उपलब्ध है: http://www.aera.net/ uploadFiles/ जर्नल्स;एंड;पब्लिकेशंसधजर्नल्सध एजुकेशनल-रिसर्चरध वॉल्यूम-33 नंबर-8/02_ERv33n8_Borko.pdf (30 जुलाई 2014 को एक्सेस किया गया)।

25. एरौट, एम. (2004) 'कार्यस्थल में अनौपचारिक शिक्षा', सतत शिक्षा में अध्ययन, खंड। 26, नहीं. 2, पृ. 247-73.

26. हाई, एन. (2005) 'व्यावसायिक शिक्षा और विकास के संदर्भ के रूप में हर दिन की बातचीत', अकादमिक विकास के लिए अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, वॉल्यूम। 10, नहीं. 1.

27. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (2005) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद। यहां उपलब्ध है: http://www.ncert.nic.in/ राइट साइड/ लिंक/ पीडीएफ/ फ्रेमवर्क/इंग्लिशध nf2005.pdf (25 सितंबर 2014 को एक्सेस किया गया)।

28. हिल्फर्टी, एफ. (2008)। शिक्षक व्यावसायिकता और सांस्कृतिक विविधता: बदलते ऑस्ट्रेलिया के लिए कौशल, ज्ञान और मूल्य। ऑस्ट्रेलियाई शैक्षिक शोधकर्ता, 35 (3), 53-70।

29. हिलफर्टी, एफ. (2008)। शिक्षक व्यावसायिकता और सांस्कृतिक विविधता: बदलते ऑस्ट्रेलिया के लिए कौशल, ज्ञान और मूल्य। ऑस्ट्रेलियाई शैक्षिक शोधकर्ता, 35 (3), 53-70।

30. इवांस, एल. (2008). व्यावसायिकता, व्यावसायिकता और व्यावसायिकता का पेशा। याब्रीताश जे. एजुकेट शिलस्टेरिज, 56(1): 20-38।

Scanned with OKEN Scanner

31. बॉल, ए.एफ. (2009) 'सांस्कृतिक और भाषाई रूप से जटिल कक्षाओं में उत्पादक परिवर्तन के सिद्धांत की ओर', अमेरिकन एजुकेशनल रिसर्च जर्नल, वॉल्यूम। 46, नहीं. 1, पृ. 45-72.

32. ब्रैडबरी, एल.यू. (2010)। शिक्षाप्रद सलाह: रिश्तों की सलाह के माध्यम से सुधार-आधारित विज्ञान को बढ़ावा देना। विज्ञान शिक्षा, 94(6)] 1049-1071| http://doi.org/10.1002/sce.20393

33. डेमिरकासिमोग्लू, एन. (2010)। विभिन्न दृष्टिकोणों से "शिक्षक व्यावसायिकता" को परिभाषित प्रोसीडिया-सामाजिक और व्यवहार विज्ञान, 9, 2047-2051।

34. बटर, आर., और हरमन्स, जे. (2011)। परिवीक्षा में व्यावसायिक संस्कृति पर अनुभवी व्यावसायिक प्रभाव। यूरोपियन जर्नल ऑफ प्रोबेशन, 3(3), 31-42।

35. मीडोर, डी. (2019)। शिक्षकों के लिए समस्याएँ जो उनकी समग्र प्रभावशीलता को सीमित कर विचार कंपनी

36. हडसन, पी., उसाक, एम. और सावरन-जेन्सर, ए. (2013) 'पांच कारक परामर्श उपकरण का उप प्राथमिक विज्ञान पढ़ाने के लिए परामर्श प्रथाओं का विश्लेषण', यूरोपियन जर्नल ऑफ टीचर एजुके वॉल्यूम। 32, नहीं. 1, पृ. 63-74.

37. विजयसिम्हा, आई. (2013)। पुस्तक समीक्षा: शिक्षा और शिक्षक व्यावसायिकता।

38. दास, ए.के., गिचुरु, एम., और सिंह, ए. (2013)। दिल्ली, भारत में समावेशी शिक्षा को लागू क व्यावसायिक विकास वितरण मोड के लिए नियमित स्कूल शिक्षकों की प्राथमिकताएँ। शिक्षा में व्यावसा विकास, 39(5), 698-711।

39. गोल्डाक्रे, बी. (2013) 'बिल्डिंग एविडेंस इनटू एजुकेशन' (ऑनलाइन), मार्च। यहां उपलब्ध है: htt dera.ioe.ac.uk/ 17530/ 1/ ben%20goldacre%20paper.pdf (20 नवंबर 2014 को एक्सेस कि गया)।

40. उलविक, एम. और सुंडे, ई. (2013) 'मेंटर शिक्षा का प्रभाव: क्या सलाहकार शिक्षा मायने रखती है शिक्षा में व्यावसायिक विकास, वॉल्यूम। 39, नहीं. 5, पृ. 754-70.

41. राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन विश्वविद्यालय (2014) राष्ट्रीय कार्यक्रम डिजाइन और पाठ्य रूपरेखा। नई दिल्ली: NUEPA. यहां उपलब्ध है: https://xa.yimg.com/ kq/groups/ 1536865 276075002/ name/ SLDP_Framework_Text_NCSL_NUEPA.pdf (14 अक्टूबर 2014 को एक्स किया गया)।

42. पार्क, एम., और सो, के. (2014)। शिक्षक व्यावसायिक विकास के अवसर और चुनौतियाँ: दक्षि कोरिया में सहयोगात्मक शिक्षण समुदाय का एक मामला। अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा अध्ययन, 7(7), 96-108

43. डेविड, सी.धएल., और अंबोटांग, ए.एस. (2014)। प्रोफेशनलिज्म गुरु नोविस दलम पेंगुरूसन पेंगेटाहुआ केसेडियन मेंगजर डान केमाहिरन बेर्फिकिर अरस टिंगगी (केबीएटी) टेरहादैप पेलकसानन पेंगाजरन सेकोलाह.सेमिनार केबंगसाण इंटीग्रिटी केलुआर्गा 2014, 1-15.

44. क्राफ्ट, एम.ए., और पपे, जे.पी. (2014)। क्या स्कूलों में व्यावसायिक वातावरण शिक्षक विकास क बढ़ावा दे सकता है? शिक्षण अनुभव के प्रतिफल में विविधता की व्याख्या करना। शैक्षिक मूल्यांकन औ नीति विश्लेषण, 36 (4), 476-500| https://doi-org/10-3102/0162373713519496

45. सेल्वाकुमार, एस.डी. (2015). कुछ निजीकरण के आधार पर गणित एसोसिएटेड की व्यावसायिकता क बढ़ाने वाले कारक।

46. डियाज, आर.वी. (2015)। नौसिखिए शिक्षकों का शिक्षण प्रदर्शन: शिक्षण प्रदर्शन, 2(3), 115-120।

47. जेमेंडा, एफ. टी., और तिनजला, पी. (2015)। इथियोपिया में शिक्षण और व्यावसायिक विकास के लि शिक्षकों की प्रेरणा की खोज: क्षेत्र से आवाजें। जर्नल ऑफ स्टडीज इन एजुकेशन, 5(2), 169-186 https://doi-org/10-5296/JSE-V5I2-7459

Scanned with OKEN Scanner

48. वाइज, सी., स्टचबरी, के., और कुक, सी. (2016)। शिक्षण-सीखने की प्रक्रिया में परिवर्तन: शिक्षकों के व्यावसायिक विकास का नेतृत्व करना।

49. करी, जे.आर., वेब, ए.डब्ल्यू., और लैथम, एस.जे. (2016)। नौसिखिया शिक्षक प्रेरण की छवियों का एक सामग्री विश्लेषण: प्रथम-सेमेंस्टर विषय-वस्तु, 6(1), 43-65। http://doi.org/10.5590/JERAP.2016.06.1.04.

50. श्रॉफ, एच.पी., हार्डिकर-सावंत, एस., और प्रभुदेसाई, ए.डी. (2017)। मुंबई, भारत में स्कूल शिक्षकों के बीच अटेंशन डेफिसिट हाइपरएक्टिविटी डिसऑर्डर (एडीएचडी) के बारे में ज्ञान और गलत धारणाएँ। विकलांगता, विकास और शिक्षा के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 64(5), 514-525।

51. हैडॉक, के., और श्रीवास्तव, एच. (2019)। पर्यावरण शिक्षा के शिक्षण में पर्यावरण दर्शन अंतर्निहित है: भारत में एक केस स्टडी। पर्यावरण शिक्षा अनुसंधान, 25(7), 1038-1065।

52. श्रीनिवासन, आर. (2019)। भारत में शिक्षक शिक्षा प्रोफेसर के कार्य को समझने की दिशा में। भविष्य के लिए उच्च शिक्षा, 6(1), 101-114।

53. मिश्रा, पी.के. (2021)। शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय पेशेवर मानक: पूर्वव्यापीकरण और रोडमैप। विश्वविद्यालय समाचार, 59, 3-9.

54. सिंह मनोज कुमार. (2022)। व्यावसायिक शिक्षा में व्यावसायिक विकास और शिक्षक शिक्षा। www.srjis.com में (पृ. 17193-17208)। स्कॉल्ली रिसर्च जर्नल के लिए अंत:विषय अध्ययन। https://oji.net/articles/2022/1174-1658751272.pdf। ऑफलाइन आईएसएसएन 2278-8808, एसजे फाइल 2021 = 7.380 गंतव्य- 10/71।

55. द्विवेदी, ए., और सारंगपाणि, पी.एम. (2023)। कहानी सुनाने के संबंध में भारतीय माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की धारणाएँ और मान्यताएँ। शिक्षाशास्त्र: एक अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 1-14।

56. हैरिसने, एस., येंगवे, जे., म्वेल्वा-जगाम्बो, एल., कासिवु, जी., म्वान्या, जे.एम., किग्गुंडु, जे., नगामऊ, सी., ओबेगी, एफ., लोयोला, आर., मैटानेन, एस., और लेटिनेन, ई. (2022)। व्यावसायिक शिक्षक प्रशिक्षण की चुनौतियाँ और आवश्यकताएँ। HAMK अनलिमिटेड प्रोफेशनल, 25-10-2022| https://urn.fi/URN:NBN:fi - fe-2022101161556

57. मेंगनाथन, आर. सेवाकालीन व्यावसायिक विकास में शिक्षक शिक्षण। रवनीत कौर, 106.

58. मंसूर, ए.एन., अब्दुल्ला, एन.ओ., वहाब, जे.ए., रसूल, एम.एस., नोर, एम.वाई.एम., नोर, एन.एम., और रऊफ, आर.ए. (2015)। समस्या-आधारित शिक्षा का प्रबंधन: शैक्षिक अभ्यास के लिए चुनौतियाँ और समाधान। एशियाई सामाजिक विज्ञान, 11(4), 259-268। https://doi-org/10-5539/ass-v11n4p259

59. बैरेट, जे., जोन्स, जी., मूनी, ई., थॉर्नटन, सी., कैडी, जे., गिनी, पी., और ओल्सन, जे. (2002)। नौसिखिया शिक्षकों के साथ काम करना: व्यावसायिक विकास के लिए चुनौतियाँ। गणित शिक्षक शिक्षा और विकास, 4(जनवरी), 15-27।

60. फौजिया, ए., किम, एम., ऐ, एम., हकीजिमाना, वी., और हूर, जे. (2021)। शिक्षकों की व्यावसायिकता पर समाज की धारणा का प्रभाव। जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड लर्निंग, 15(4), 545-551। https://doi.org/10.11591/edulern.v15i4.20292

61. ज्वर्टा, आर.सी., वुबेल्स्ब, टी., बर्गेना, टी.सी.एम. और बोलहुइस्क, एस. (2007) 'पारस्परिक सहकर्मी कोचिंग के संदर्भ में अनुभवी शिक्षक शिक्षण', शिक्षक और शिक्षण: सिद्धांत और अभ्यास, वॉल्यूम। 13, नहीं. 2, पृ. 165-87. यहां उपलब्ध है: http://eñpertisecentrumlerenvandocenten.nl/ फाइलें/TTTP_collegiale_coaching_0.pdf।

62. अवेया, ए., मैकएवान, एच., हेयलर, डी., लिंस्की, एस., लुम, डी., और वाकुकावा, पी. (2003)। एक यात्रा के रूप में मार्गदर्शन. शिक्षण और शिक्षक शिक्षा. http://doi.org/10.1016/S0742-051X(02)00093-8

Scanned with OKEN Scanner

Online Books and Websites:

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति की सफलता में शिक्षकों की भूमिका कैसे महत्वपूर्ण है? (2023, 12 अक्टूबर)। वर्थना. https://varthana.com/school/how-the-role-of-teachers-is-key-for-the-success-of-national-education-policy
2. https://www.entrepreneur.com/en-in/news-and-trends/challenges-in-implementing-the-national-education-policy/357910
3. कैलाश, (2021)। शिक्षक शिक्षा की चुनौतियाँधसमस्याएँ। कैलाश शिक्षा. https://www.kailasheducation.com/2021/08/adhapak%20shiksha-ki-samasya.html
4. सैक्स, जे. (2003). कार्यकर्ता शिक्षण पेशा. ओपन यूनिवर्सिटी प्रेस.
5. रल्हन, बी.डी. (2020, 16 अक्टूबर)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को लागू करने में चुनौतियाँ। उद्यमी। https://www.entrepreneur.com/en-in/news-and-trends/challenges-in-implementing-the-national-education-policy/357910
6. (2023, 7 मार्च)। कक्षा में शिक्षकों के सामने आने वाली 10 चुनौतियाँ। **www.prodigygame.com.**
7. साको, एस. (**2023, 1** नवंबर)। व्यावसायिक शिक्षक प्रशिक्षण की चुनौतियाँ और आवश्यकताएँ। HAMK अनलिमिटेड। https://unlimited.hamk.fi/ammatillinen-osaamienn-ja-opetus/the-challenges-and-needs-of-professional-teacher-training/
8. वल्लभ, जी. (2020, 12 अगस्त)। क्या राष्ट्रीय शिक्षा नीति वास्तविक मुद्दों से चूक गई है? द न्यू इंडियन एक्सप्रेस। https://www.new Indianexpress.com/opinions/2020/aug/12/does-the-national-education-policy-miss-out-on-real-issues-2182273.html
9. शर्मा, भू.चन्द्र. (2021). एनईपी 2020: शिक्षकों के लिए चुनौतियाँ और अवसर। (2021, 29 सितंबर)। एनईपी 2020: शिक्षकों के लिए चुनौतियाँ और अवसर।https:///content/region-growth/india/pearson-india/en/blog/2021/09/nep-2020--challenges-and-opportunities-for-teachers.html।
10. प्रशासनिक संचार प्रणाली:अमेंरिकी शिक्षा विभाग वैज्ञानिक अखंडता नीति ,विभागीय निर्देश। ACSD-IES-001 https://ies.ed.gov/pdf/EDScientificIntegrityPolicy.pdf?approved=9.12.18
11. फ्रीडसन, ई. (1971). रुकावटें और अन्य समस्याएं. बेवर्ली येल्स, सीए: सेज पाहके स्वान ।
12. https://uran-fi/uran:mbn:fi-fi2022101161556
13. file://C:/Users/bhara/Downloads/Book_review_Education_and_Teacher_Profes.pdf
14. https://ms.wikipedia.org/wiki/Profesionalisme
15. https://files.eric.ed.gov/fulltefit/EJ1070426.pdf
16. https://files.eric.ed.gov/fulltefit/EJ1324499.pdf
17. https%//hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B5%E0%A5%8D%E0%A4%AF%E0%A4%B5%E0%A4%B8%E0%A4%BE%E0%A4%AF
18. https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC3987476/
19. https://www.professions.org.au/what-is-a-professional/
20. https://www.encyclopedia.com/science/encyclopedias-almanacs-transcripts-and-maps/profession-and-professionalism
21. https://www.prodigygame.com/main-en/blog/challenges-of-teaching/
22. http://hdl.handle.net/10603/185924

Scanned with OKEN Scanner